भूमिका-

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भूमिका पर बात करने से पहले यह जरूरी है कि कांग्रेस की मूल प्रकृति एवं सिद्धांतों को अवश्य जान लिया जाए। कांग्रेस सिर्फ एक राजनीतिक संगठन मात्र न होकर एक राष्ट्रीय आंदोलन अधिक था। और राष्ट्र के शुभचिंतकों एवं निर्माताओं के लिए एक उचित, वृहत राजनीतिक मंच था। राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए एवं प्रशासन में भागीदारी के उद्देश्य से कांग्रेस का गठन किया गया था। सबसे पहले तो भारत को एक राष्ट्र के रूप में गठित करना था और उसके लिए यह जरूरी था कि अधिक से अधिक क्षेत्रों के लोग एकत्रित हों और राष्ट्रहित में वार्तालाप हो सके। राष्ट्र की आवश्यकताओं और समस्याओं को देखते हुए संवैधानिक सुधारों की मांग की जाए और प्रशासनिक तब्दीलियों के माध्यम से राष्ट्र की परिस्थितियों को बेहतर किया जा सके। साथ ही देश के लोगों को राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्र भावना से अवगत कराया जाए सके। लोगों को शिक्षित करना भी बहुत जरूरी था और सबसे जरूरी था लोगों को मानसिक रुप से सशक्त बनाना।

कांग्रेस ने यह तय किया कि सर्वप्रथम महत्वपूर्ण एवं राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर ही चला जाए। कांग्रेस मुख्यत: राजनीतिक मुद्दों को लेकर ही काम करती थी, इसी कारण कांग्रेस ने सामाजिक सुधार का सवाल नहीं उठाया इसके दूसरे अधिवेशन में ही कांग्रेस अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी ने कहा था कि "राष्ट्रीय कांग्रेस को अपने आपको सिर्फ उन सवालों तक ही सीमित रखना चाहिए जो सवाल पूरे राष्ट्र से जुड़े हों और जिन सवालों पर सीधी भागीदारी की गुंजाइश हो। इसलिए सामाजिक सुधारों पर चर्चा करने के लिए कांग्रेस उचित मंच नहीं थी। संभवत: उसी के चलते महिलाओं की समस्याएं दरकिनार हो गईं और उनकी स्थिति में सुधार के प्रयास कांग्रेस के भीतर नहीं किए जा सके। जैसे प्रतिनिधि शिक्षा, बाल विवाह, बहुपत्नी विवाह प्रथा और विधवा आदि मुद्दे कांग्रेस से अछूते रहे। फिर भी कांग्रेस को महिलाओं का सहयोग बराबर मिलता रहा।

राजनीतिक चेतना जगाने और जनमत तैयार करने का कार्य सबसे पहले शिक्षित तहकों से शुरू किया गया उसके बाकी तबकों में। इसका तात्कालिक उद्देश्य जनता को लगातार राजनीतिक गतिविधियों में शरीक करना था। वह जनता की तात्कालिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए किसी संघर्ष में फसना नहीं चाहते थी। अपने समय की सशक्त सत्ता के खिलाफ एक संगठित राजनीतिक विरोध को जन्म देने के लिए अपने अंदर आत्मविश्वास और दृढ़ता पैदा करनी थी।

भारत के एक राष्ट्र बनने एवं आजादी की ओर बढ़ने की प्रक्रिया में वृहद स्तर के कार्यक्रम चलाए गए, जिनमें कांग्रेस केंद्रीय भूमिका में रही। शीघ्र ही उसे भारतीय राष्ट्र की आवाज माना जाने लगा, किंतु कांग्रेस के अलावा और कई ऐसे संगठन थे जो राष्ट्र निर्माण कार्य में लगे हुए थे जिनके अंतर्गत महिलाएं प्रशिक्षित होने के बाद कांग्रेस में अपना योगदान दे रहीं थीं। उदाहरण के लिए देश सेविका संघ, राष्ट्रीय स्त्री संघ, गांधी सेवा सेना, महिला राष्ट्रीय संघ एवं नारी सत्याग्रह समिति आदि। इसी तरह कांग्रेस में महिलाओं की संख्या बढ़ती गई एवं गांधी के आगमन से राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा मिली उन्होंने महिलाओं की भागीदारी पर पूरा जोर दिया। उन्होंने महिलाओं को विरोध प्रदर्शन के लिए अनमोल अमिट शक्ति के रुप में पहचाना। गांधी के वक्तव्यों से समाज में परिवर्तन शुरू हुआ, महिलाओं का दैनिक स्वरूप बदला। उसके बाद महिलाओं ने भी आंदोलनों में जोरदार भागीदारी की और कांग्रेस तथा राष्ट्रीय आंदोलनों में अपने महत्वपूर्ण योगदान से इतिहास को गौरवमयी बनाया।

शोध प्रश्न-

1. शुरुआती कांग्रेस में किस तरह, कौन सी महिलाएं शामिल हुईं और क्यों?

2. महिलाओं की भागीदारी के क्या-क्या कार्यक्रम थे, या उन्हें किन भूमिकाओं में रखा गया?

3. महिलाओं ने कांग्रेस के लिए क्या-क्या किया, किस तरह उनहोंने कांग्रेस के मूल्यों को आत्मसात किया एवं कैसे कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाया?

4. क्या कांग्रेस महिलाओं को उनकी प्रतिभा के मुताबिक उचित मंच दे पायी?

5. आज़ादी के समय महिलाओं को क्यों मुख्यधारा से एवं बाद में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से गायब कर दिया गया?

यह शोध भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885-1947) में महिलाओं की भूमिका पर आधारित है। इस शोध में आजादी से पहले राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्ययन किया गया है जिसमें महिलाओं की भूमिका को पहचानने का प्रयास किया गया है। आधुनिक भारत के इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का बहुत महत्व है और आजादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्यतत: नेतृत्व कांग्रेस के हाथों में ही रहा। उसी कांग्रेस को अध्ययन करते हुए कांग्रेस तथा देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी, सक्रियता एवं योगदान का इस शोध में अध्ययन किया गया है।

कांग्रेस में कब-कब कौन सी महिलाओं ने अपनी भूमिकाएं दे और किस तरह कांग्रेस के उद्देश्य नीतियों को सफल बनाने में सहयोग दिया किस तरह आजादी का मार्ग प्रशस्त किया इन्हीं सब प्रश्नों के साथ इस शोधको संपन्न किया गया है। भारतीय राजनीति में महिलाएं कितना महत्व रखती थीं या राजनीतिक परिदृश्य में महिलाओं की क्या स्थिति थी, महिलाओं के लिए राजनीति में आने के लिए किस तरह का माहौल था? महिलाओं ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए क्या-क्या किया राष्ट्र के लिए क्या-क्या किया? इन्हीं प्रश्नों के साथ इस शोध कार्य को पूरा किया गया है।

प्रस्तुत शोध में बताया गया है कि महिलाओं ने कांग्रेस में अपनी भागीदारी देकर देश की राजनीति में सक्रिय रुप से भागीदारी की और कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में पूरा सहयोग दिया। बहुत सी महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त थे जिन्होंने राष्ट्र की राजनीति में उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त की हुई थी और वह किसी भी मामले में पुरुषों से पीछे नहीं थीं। कांग्रेस ने जब जब राष्ट्रव्यापी आंदोलन किएमहिलाओं ने अपनी पूरी मेहनत एवम लगन से राष्ट्र की सेवा की। राष्ट्र की आजादी के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। कांग्रेस राष्ट्र से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर बात करती थी राष्ट्र की आवश्यकताओं,

समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नीतियां बनाती थी एवं लक्ष्यों को निर्धारित करती थी। फिर उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करती थी किंतु उसका रास्ता सांविधानिक तरीके से धीरे-धीरे स्वशासन लाना था। महिलाओं की भी बहुत जरूरत थी बहुत सांस आए थे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने एवं समस्याओं के निवारण के लिए महिलाएं कांग्रेस को एक उचित मंच समझ समझती थी जिसके माध्यम से हुआ आजाद होना चाहती थीं। जिसके लिए उन्होंने कांग्रेस का भरपूर सहयोग दिया और कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाने में लगी रहीं।

कांग्रेस ने महिलाओं को जरुरत पड़ने पर आवश्यकतानुसार उन्हें काम दिया और उनकी प्रतिभा का इस्तेमाल किया। किंतु उनकी उन्नति के लिए कोई खास प्रयास नहीं किया। यह सब बातें शोध के दौरान पता चले और नए-नए तथ्य उभरकर सामने आए। कांग्रेस के इतिहास में इस तरह से महिलाओं की विलुप्तता नजर आती है वह सही नहीं है क्योंकि महिलाओं के सहयोग के बिना कांग्रेस अपने उद्देश्यों को सफल नहीं बना सकती थी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं ने भरपूर सहयोग दिया। निरंतर कांग्रेस के लिए, कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्र के लिए समर्पित रहीं। कांग्रेस के इतिहास का अध्ययन करते हुए उस समय की तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकृतियां साफ दिखाई देती हैं। साथ ही नए विचारों और नवाचारों के प्रभावी होने के कारण बदलाव की कोशिशें भी दिखाई देती हैं। यह कह देना गलत नहीं होगा कि यदि महिलाओं ने कांग्रेस को जरा भी सहयोग न दिया होता या कांग्रेस की नीतियों में खुद को भागीदार न बनातीं तो स्वाधीनता पाना मुश्किल था। यह कहा जा सकता है कि बहुत सी सीमाओं के बावजूद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की सहभागिता उपयोगी रही है।